

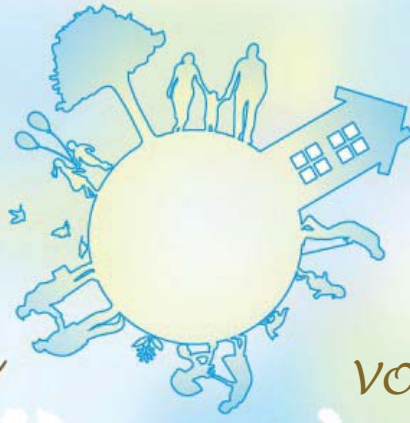
Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

8

2018

VOL. 155



Founder's Essay

सहयोगी की खोज कैसे करें

व्यवसाय में, वे कहते हैं कि किसी उत्पाद को कैसे बेचना है के बारे में सोचने के बजाय, यदि आप लगातार खरीदारों की भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम हैं, तो आपका सफल होना निश्चित है। यह लोगों के बीच के संबंधों का भी रहस्य है। सबसे पहले, हर कोई विपरीत है। हम यह सोचकर अपने विचार को दूसरों पर थोपते हैं कि यह सही है। हम असंतुष्ट होते हैं जब चीजें मनोनुकूल नहीं घटती हैं, यह स्वार्थपरता की परिभाषा है। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप उन पर दबाव बनाने की कोशिश करते हैं, आपके आस-पास के लोग आपके रास्ते नहीं जाएँगे।

यही कारण है कि मैं हमेशा दूसरे व्यक्ति के विचार को पहले स्वीकार करता हूँ। तब मैं सोचता हूँ कि कैसे मैं अपने विचार को दूसरों के विचार साथ संरेखण और सामंजस्य बना सकता हूँ। यदि

आप ऐसा करते हैं, तो आपको आश्चर्य किया जा सकता है कि आप अपनी सभी क्षमताओं के उपयोग में सक्षम होंगे।

कोई बात नहीं, आप अपने विचार को स्वीकार्य बनाने के लिए कितना भी कठिन कोशिश करते हैं, आखिरकार एक व्यक्ति क्या कर सकता है इसकी सीमाएँ हैं। प्रश्न यह है कि आप प्रतिभावान लोगों को कैसे इकट्ठा करेंगे, जो आपके साथ मन और हृदय से साथ मिलकर सहयोग करेंगे। यह महत्वपूर्ण है। जब आप आदरणीय दृष्टिकोण को अपनाते हैं, हर कोई अपने काम के माध्यम से बोधिसत्व अभ्यास को अपना रहा है, तो आपके कठिन कोशिश की आवश्यकता समाप्त है। यदि आप दूसरों के साथ अपने आप को समायोजित करते हैं, तो वे निश्चित रूप से आपसे बीच रास्ते में मिलेंगे, और आप पूरी तरह से एक-दूसरे को समझेंगे।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co. 1997), pp124-125

Living the Lotus Vol. 155 (August 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

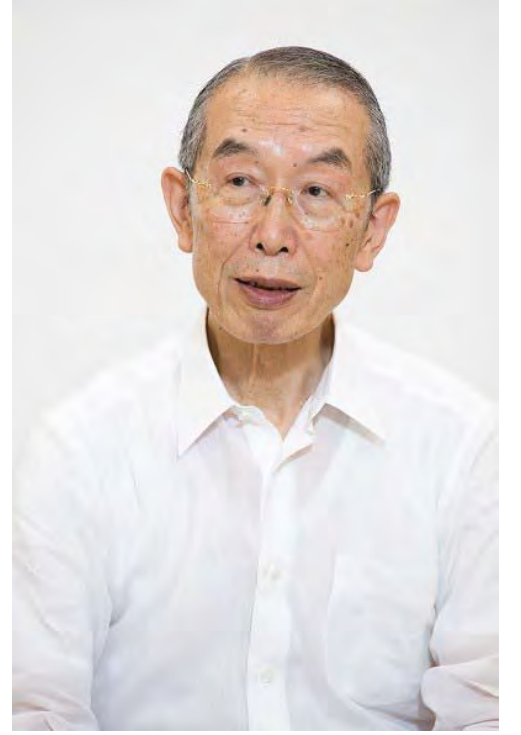
Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

आदरभाव तथा शर्म से भरा मन



निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिशशो कोसेइ काइ

बुद्ध का परामर्श

इस माह हम सम्यक कर्मान्त की परीक्षा करें, जो आष्टांगिक मार्ग एक अंग है। बौद्धधर्म के पारिभाषिक शब्दकोश की परिभाषा में सम्यक कर्मान्त का अर्थ कुशल कार्य या औचित्यपूर्ण कार्य है। यह शारीरिक क्रियाकलाप की शुद्धता को भी दर्शाता है, जिसमें शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक क्रियाकलापों में एक इसमें आता है। वास्तव में, 'सम्यक विचार (मन)' और 'सम्यक वचन' की विवेचना पत्रिका के जून और जुलाई अंकों में है, जो तीन क्रियाकलापों में दो हैं। वे मन के क्रियाकलाप और वचन के क्रियाकलाप के निर्मल रूप की ओर इंगित करते हैं।

किस प्रकार का क्रियाकलाप सम्यक शारीरिक क्रियाकलाप है? एक बौद्ध पुस्तिका के अनुसार वे तीन हैं: हिंसा नहीं, चोरी नहीं, एवं व्यभिचार नहीं।

धम्मपद में उल्लेख है, "प्रत्येक व्यक्ति हिंसा से काँपता है और मृत्यु से डरता है। आप स्वयं को दूसरों के साथ तुलना करें और आप उसकी हिंसा नहीं करेंगे या उनसे हिंसा नहीं करवायेंगे।" यदि आप स्वयं की हत्या के विषय, अपने कुछ चीजों की चोरी के विषय, या स्वयं के व्यभिचार से आहत होने के विषय सोचते हैं, आप दूसरों के साथ वैसी हरकत कभी नहीं करेंगे।

शाक्य मुनि को दुःखों से मुक्ति के मार्ग का बोध हुआ, जिसे हम इस लोक में अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट दुःखों के कारण को समझाया और शरीर संबन्धी तीन शीलों की पहचान की—अहिंसा, अस्तेय एवं अव्यभिचार—जो दुःखों से मुक्ति के मार्ग हैं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हम इन शीलों को आदेश रूप में नहीं, बल्कि परामर्श समझें, जो हमें हर दिन प्रफुल्लित और हर्षमय जीवन जीने में सहायता करते हैं, जैसाकि शाक्यमुनि ने हमें उद्धार से परामर्श देते हुए कहा है, "यदि आप इसे कभी नहीं भूलते हैं, तो आप परिवार और समाज में सहजभाव से और शांति से रह सकेंगे।"

सम्यक क्रियाकलाप निश्चित रूप से एक समस्या है

शारीरिक सम्यक क्रियाकलाप में--"जीवित प्राणियों की हिंसा नहीं करना, वस्तुओं की चोरी नहीं करना, एवं अनुचित यौन सम्बन्ध नहीं बनाना है। अवश्य ही, ऐसा मानने में कोई गलती नहीं है कि ये कुशल कार्य हैं, जैसेकि हिंसा और चोरी की समस्यायें कानून के दायरे में भी आती हैं। फिर भी, हमें बताया

गया है कि निषेध की एक सूची कहती है कि "आपको नहीं करना चाहिए..." ही कुशल कार्य में आते हैं। हम अनुभव कर सकते हैं कि कुशल कार्य मनोवैज्ञानिक रूप से, एक बहुत बड़ी समस्या है। यदि ऐसा होता है, इससे पहले कि हम शीलों को प्रारंभ करने का सोंचे, हमें वैसे लोगों के समान बनना चाहिए, जो सभी समय स्वभावतः ही "मदद नहीं करते हैं, लेकिन इस तरह से कार्य करते हैं जो (कुशल कार्य) पीड़ा से बचाता है।"

ऐसा करने के लिए मूल मंत्र "आदरभाव से परिपूर्ण तथा शर्म से भरा मन" है।

बौद्ध धर्मावलंबी से रूप में हम बुद्ध की पूजार्चना करते हैं और बुद्ध बनने के अपने व्रत का अनुसरण करते हैं। फिर भी, वैसे करते हुए, हम प्रायः अपनी त्रुटियों को देखते हैं।

मासाहिरो यासुओका (1898-1983), पूर्वीय विचारों के प्रख्यात विशेषज्ञ के अनुसार, यह "आपका आदरभाव से परिपूर्ण मन, अर्थात् दूसरे शब्दों में, मन जो शनैः शनैः ही उच्चतर आध्यात्मिक स्तर तक बढ़ने और महानता तक पहुँचने का प्रयास है। इस प्रकार, यह मन ही है जो साथ ही आपको स्वयं पर सोचने को प्रेरित करता है और अपनी त्रुटियों पर शर्मिन्दा कराता है।" क्या हमें संरक्षित करता है, यह बाद का प्रश्न है। यासुओका ने पुनः प्रारंभ किया और ऐसा लिखा।

"आत्म-चिन्तन स्वयं के बारे में चिंतित रहना है, स्वयं को अनुशासन में रखना है और स्वयं को नियंत्रित रखना है" - दूसरे शब्दों में, यदि आप आदरभाव से परिपूर्ण और शर्म से भरा मन को जन्म देते हैं, तो आपको अपनी त्रुटियों का बोध है और आप सावधान रहते हैं कि आपका कार्य देवताओं और बुद्धों की इच्छाओं के अनुरूप है। हम इसकी व्याख्या इस रूप में करते हैं, यदि हम बुद्ध और उनकी शिक्षा के शरण में हैं, तो हम भद्र पुरुष बन सकते हैं जिसके लिए कुशल मार्ग निश्चित है।

इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि आदरभाव से परिपूर्ण और शर्म से भरा मन प्रगति और सुधार की खोज में मानव प्रवृत्ति से जुड़ा हुआ है। यदि ऐसी स्थिति है, तो हम में से उन लोगों के लिए जो स्वयं को भूल जाते हैं और पथ से भटक जाते हैं, ये दो तरह के मन हमें जीवन के एक प्रामाणिक मानवीय प्रवृत्ति की ओर पीछे ले जाता है।

हम यह भी कह सकते हैं कि "कुशल कार्य" वे हैं जो आदरभाव से परिपूर्ण और शर्म से भरा मन दोनों के द्वारा समर्थित हैं, और ये दो मन और दो कार्य--लोगों के बीच से राष्ट्रों के बीच के दिन-प्रतिदिन के सम्बन्ध में—शान्ति कायम करने में महत्वपूर्ण हैं। मुझे लगता है कि वे अभी किसी भी स्थिति में विराट शक्ति उत्पन्न करते हैं, जिसमें हमारे बुद्ध मार्ग को भूल जाने की संभावना है।

From Kosci, August 2018.





समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश
एवं मुख्य बिन्दुयें

बोधिसत्त्व महासुभूति ने बोधिसत्त्वों के परिषद के प्रतिनिधि के रूप में बुद्ध से प्रश्न किया—इनको बोधिसत्त्व के रूप में कौन सा अभ्यास करना चाहिए, जिससे वे अविचलित रह कर सम्यक सम्बोधि को प्राप्त कर सकें। शाक्यमुनि ने प्रश्न के प्रत्युत्तर में ऐसा कहा।

प्रकृति एवं गुण प्रशान्त एवं रिक्त है

“अमितार्थ का सिद्धान्त वह मार्ग है जो सभी को सम्यक संबोधिज्ञान की प्राप्ति की ओर प्रवृत्त कराता है। इस सिद्धान्त को समझने के लिए हमें प्रारंभ में निम्नलिखित सत्य को समझना चाहिए।

लोक में सभी वस्तुएँ समान हैं और सदा महासमन्वय की स्थिति में हैं। उन पदार्थों में हम अपनी आँखों से देखते हैं कि सभी वस्तुयें हर तरह से बड़ी तथा छोटी हैं, उत्पत्ति तथा विलुप्त धर्मी हैं, चल तथा अचल हैं, एवं भिन्न तथा परिवर्तनशील हैं। परन्तु इसे अवश्य समझना चाहिए कि सभी एक सत्य (धर्म) पर आधारित हैं, जैसेकि रिक्तता, जो सर्वत्र समान है।”

यह, “सभी वस्तुयें प्रकृति एवं गुण में प्रशान्त एवं रक्त” की देशना है। ‘प्रकृति’ वस्तुओं के स्वभाव या विशिष्टताओं को दर्शाता है और ‘गुण’ द्रष्टव्य रूप को दर्शाता है।

‘रिक्तता’ का अर्थ है सभी वस्तुओं का अस्तित्व प्रतीत्यसमुत्पन्न है और किसी वस्तु की परम सत्ता नहीं है या सभी वस्तुओं की उत्पत्ति के मूल में कुछ नहीं है। इसलिए, इसका यह भी अर्थ है कि सभी वस्तुयें सारतः समान हैं। प्रशान्त परम समन्वय की अवस्था का संकेत है। दूसरे शब्दों में, यह आदर्श तथा गतिमानता की अवस्था है जिसमें सभी वस्तुयें निरन्तर परम समन्वय में विकास कर रहे हैं।

‘प्रकृति एवं गुणों में प्रशान्त एवं रिक्त है,’ इस सत्य को उद्घाटित कर बुद्ध ने पुनः कहा कि इस सत्य को देखना कठिन है,

लोग केवल दृष्ट आकार को देखते हैं, जो आँखों के सामने हैं। वे झूठा और मनमाना आंकलन करते हैं, मानते हैं कि “इसमें लाभ है,” और “इसमें हानि है।” ऐसे अवांछित विचारों को जन्म देते और सभी प्रकार के बुरे कर्मों में उलझते हैं और वे स्वयं को अपनी गलतियों से मुक्त करने में असमर्थ हैं, जिसमें वे बहुत दुःख दर्द का अनुभव करते हैं।

बोधिसत्त्व को इन चीजों को स्पष्ट देखना चाहिए, हृदय से सहानुभूति और महाकरुणा को जन्म दें, और सभी जीवित प्राणियों की पीड़ा को दूर करने का निश्चय करें। इस दृष्टि से, मूलभूत अभ्यास सभी चीजों के सच्चे और वास्तविक स्वरूप की पूर्ण गहराई में समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, मानव पीड़ा का कारण दिखाया गया है, और जीवित प्राणियों को दुःख दर्द से मुक्त कराने के बोधिसत्त्व के मानसिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है।

तदुपरान्त बुद्ध ने बोधिसत्त्वों को सभी चीजों की अलग-अलग स्थिति और निरन्तर परिवर्तन की स्थिति को बारीकी से देखने का निर्देश दिया। बुद्ध इसकी विस्तार में विवेचना करते हुए कहा।



अमितार्थ एक धर्म (सत्य) से निकला है

संकाय, प्रकृति और जीवित प्राणियों की इच्छाओं को समझना अनिवार्य है, और जैसाकि जीवित प्राणियों का स्वरूप और उनकी इच्छाएँ असंख्य हैं, इसलिए उनके लिए धर्म की विवेचना के तरीके भी अनगिनत हैं।

यद्यपि शिक्षा में इस प्रकार अत्यधिक भिन्नता है, असंख्य अर्थ

एक धर्म से निकलते हैं, और यह एक धर्म है, अर्थात्, कोई गुण नहीं होने की अवस्था है। गुणों की इस तरह की अनुपस्थिति अभाव सूचक नहीं है और कोई भेद नहीं करता है। चूँकि इससे कोई भिन्नता नहीं आती है, सभी वस्तुयें समान हैं, और इस अवस्था को “परम सत्य” कहा जाता है।



यहाँ बौद्धधर्म के “परम सत्य” शब्द के अर्थ को स्पष्ट किया गया है। साधारणतः हम इस शब्द का अर्थ केवल वस्तुओं के गुण के रूप में समझते हैं। परन्तु यहाँ इसके गूढ गंभीर अर्थ को याद करना महत्वपूर्ण है, जब हम इसे “सभी वस्तुओं का परम सत्य” जैसी उक्ति के संदर्भ में देखते हैं। इसलिए यहाँ फिर भी साधारण आदमी के लिए समझना वास्तव में संभव नहीं है कि “परम सत्य” का सचमुच क्या अर्थ है।

बोधिसत्व महासुभूति ने बुद्ध से पूछना जारी रखते हुए कहा: “लोकप्रतिष्ठ! आपने अभी अमितार्थ की शिक्षा की पुनः विवेचना की है, (हालाँकि हम समझते हैं कि यह मूल रूप से वही है जैसा

आपने पूर्व में उपदेश किया है)। अतीत में आपकी विवेचना से यह किस रूप में अलग है? अब आप यह घोषणा कर रहे हैं कि बोधिसत्व जो अनगिनत अर्थों के शिक्षा का अभ्यास करता है, निश्चित रूप से शीघ्र सम्बोधि ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होगा?”



इन चालीस से अधिक वर्षों में, बुद्ध ने अभी तक सम्पूर्ण सत्य का उद्घोष नहीं किया है

उत्तर में, बुद्ध ने कहा कि बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त करने और लोक के ऊपर नजर दौड़ाने के बाद, अपरिहार्य निष्कर्ष था कि, अपनी वर्तमान स्थिति में, जीवित प्राणी बोधिज्ञान के लिए तैयार नहीं हैं, जिसकी विवेचना उनके लिए की गयी थी। इस कारण से, उन्होंने जीवित प्राणियों को उनकी परिस्थितियों, संकाय, प्रकृति और इच्छाओं के अनुरूप उनकी मुक्ति के लिए धर्मोपदेश करने का निर्णय किया।

इस प्रकार उनकी ग्रहण शक्ति की सीमाओं के भीतर धर्मोपदेश जारी रखते हुए, बुद्ध को अभी तक धर्म के अंतर्निहित सत्य को उद्घाटित करने का अवसर ही नहीं मिला, और इस प्रकार चालीस से अधिक वर्ष परम सत्य की पूर्ण विवेचना के बिना ही बीत गए हैं।

फिर भी जो कुछ अब तक धर्मोपदेश में आया है वह सत्य पर स्थापित है। जल की तरह, जो हर जगह है और फिर भी घाटी की धारा, खाई, तालाब, या महासागर में जल भिन्न है। धर्मोपदेश भी प्रारंभ में, मध्य में, और अन्त में बिल्कुल समान नहीं है। यद्यपि शब्द समान दिखाई दे सकते हैं, लेकिन अर्थ की गंभीरता गहरी हो जाती है।

सत्य जो सभी बुद्धों की धर्मदेशनाओं में है, वह केवल एक ही है। इस एक सत्य को समझाने का तरीका उतना अलग-अलग है जितने भिन्न चीजों की परिकल्पना लोगों के मन में है। इसके अलावा, काय, या बौद्धों का परम सत्य एक है। यह अनगिनत निकायों में बदल जाता है, और इनमें से प्रत्येक के अपने कार्य में अनगिनत परिवर्तन आता है। यह बुद्धों के अकल्पनीय क्षेत्र के अलावा कुछ नहीं है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे बुद्धत्व की सीमा तक पहुँचा बोधिसत्त्व भी शायद ही कभी जान पाता है, अकेले श्रावकों को छोड़ो- जिनका अभ्यास बुद्धि पर आधारित है और

प्रत्येक बुद्धों, जिनका अभ्यास अनुभव पर आधारित है। बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद ही इस क्षेत्र की गहराई में पैठ पा सकता है, जो बुद्ध के सिवाय किसी और के लिए अज्ञात है। जो बुद्ध के ज्ञान को प्राप्त करेगा, उसे इन अनगिनत अर्थों की गहराई से जाना चाहिए और निपुणता प्राप्त करना चाहिए।

वास्तव में, ऐसा है। जब हमें सिखाया जाता है कि सभी वस्तुयें प्रकृति और गुण में प्रशांत और रिक्त हैं, और वे सभी एक धर्म से उत्पन्न हैं, हम में से अधिकांश को विचार केवल अस्पष्ट एवं सामान्य है। लेकिन कोई भी इसकी पुष्टि नहीं कर सकता है कि वह इसे स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से समझता है। यदि आप इसे स्पष्ट रूप से समझना चाहते हैं, तो आपको बुद्ध के बोधिज्ञान को प्राप्त करना होगा। तब आप स्वयं एक बुद्ध है। यही कारण है कि बुद्ध ने पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त- 2, “उपाय कौशल्य” में कहा है: “केवल बुद्ध के साथ एक बुद्ध ही सभी वस्तुओं के परम सत्य को समझ सकते हैं।”

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें निराश होना चाहिए। हमारे पास जो अमितार्थ सूत्र के रूप में आता है, उपदेश के समय यहाँ तक कि शारिपुत्र को भी, जो ज्ञान में शिष्यों में सर्वोपरि थे, ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था। इसलिए बाद में, जब उन्होंने सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का उपदेश किया, बुद्ध ने धैर्यपूर्वक धर्म की व्याख्या की ताकि सभी जीवित प्राणियों को सम्बोधिज्ञान प्राप्त हो सके। इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई अमितार्थ सूत्र को पूरी तरह से नहीं समझता है। इस अवस्था में इसे ध्यान में रखना ही पर्याप्त है, भले ही सभी वस्तुओं की “परम सत्य” का अर्थ मात्र धुँधला हो।



शांति के लिए सही कार्य महत्वपूर्ण है

अगस्त में युद्ध और शांति शब्द मन में आते हैं। हिरोशिमा और नागासाकी में हर वर्ष शांति स्मारक समारोह का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग परमाणु बम के शिकार मृत आत्माओं की शान्ति के लिए मौनभाव से प्रार्थना करते हैं और विश्व शांति की प्रतिज्ञा लेते हैं। लोग परमाणु बम के शिकार मृत आत्माओं की याद में स्मारक पर खुदे शिलालेख से स्वयं को याद दिलाते हैं, "सभी आत्मायें यहाँ शांति से रहें, क्योंकि हम बुराई नहीं दोहरायेंगे।"

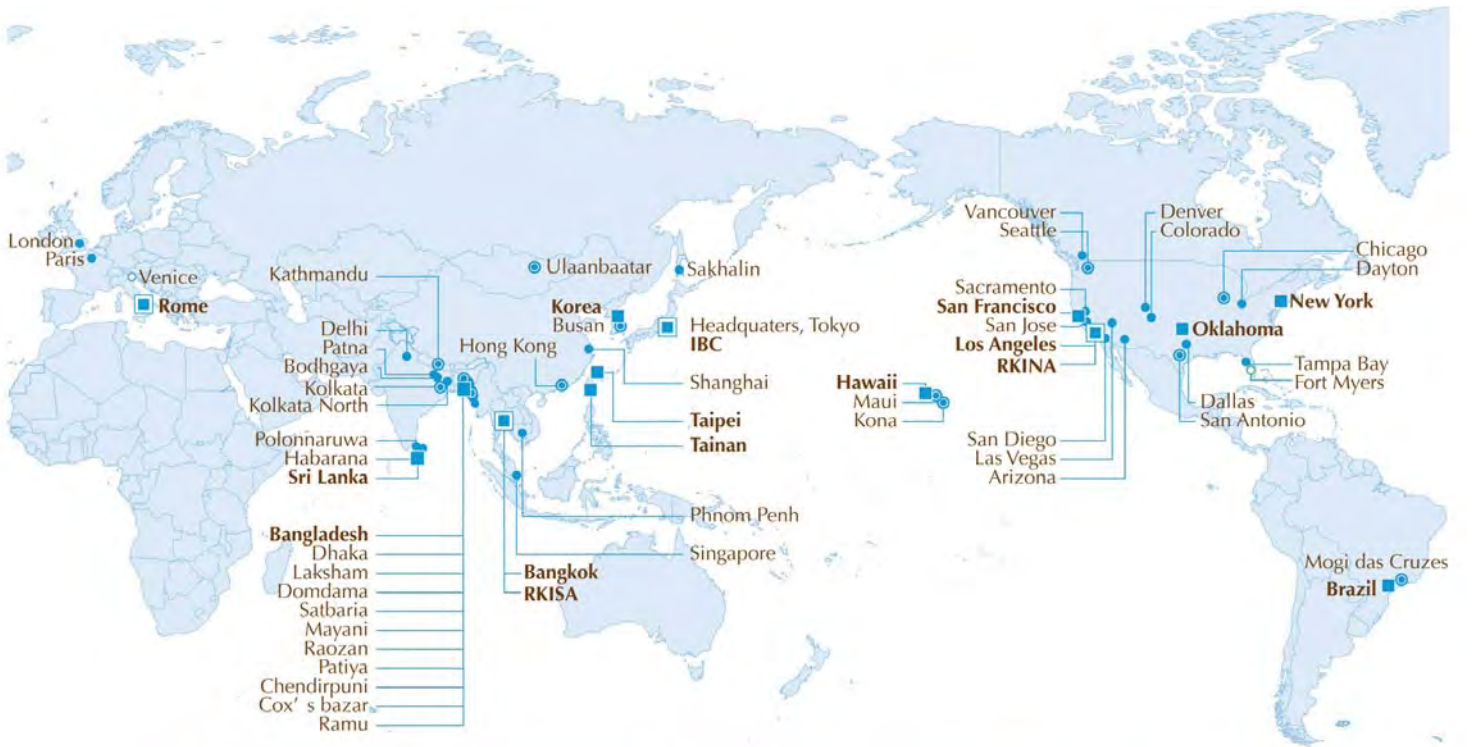
धार्मिक लोगों की शांति के प्रति समर्पण की अभिव्यक्ति के रूप में, विश्व शांति के लिए प्रार्थना की अंतर-धार्मिक सभा इटली के अस्सीसी में 1986 में आयोजित की गई थी। अस्सीसी की भावना को ध्यान में रखकर, 1987 से हर अगस्त में माउंट हिएई पर धार्मिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया जाता है।

प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने इस महीने के अपने संदेश में पुष्टि की है कि बौद्ध धर्म के आष्टांगिक मार्ग का सम्यक कर्मान्त या सही कार्य का अर्थ है सम्मान और शर्म के भाव से समर्थित व्यवहार, और ऐसा मन और कार्य दिन प्रतिदिन के लोगों के बीच के सम्बन्धों से लेकर राष्ट्रों के बीच के संबंधों में शांति बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

मुझे आशा है कि हम अपने दैनिक कार्यों पर सोच विचार कर शांति की दिशा में एक कदम आगे बढ़ायेंगे।

रेवरेन्ट कोईची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.
E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2018

Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibc-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar, New Delhi
110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna

Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai